मेवाड़ मंजरी

[गौरव गीत]

जगदीशचन्द्र शर्मा



गतिमान प्रकाशन, जयपुर

MEWAR MANJARI [POETRY]
Jagdishchandra Sharma

प्रकाशक : गतिमान प्रकाशन,
1237, रास्ता अजबघर, जयपुर-302 003
वर्ष : 1989
मूल्य : पच्चीस रुपये मात्र
मुद्रक : प्रिन्ट 'प्रो' लैण्ड, न्यू कालोनी, जयपुर



THE PALACE
UDAIPUR
INDIA

दो शब्द

मेवाड़ भूमि का आत्मगौरव सदा वन्दनीय रहा है। भाषा, संस्कृति, धर्म, सम्प्रदाय, देश, प्रदेश, जाति, वर्ग आदि से ऊपर उठकर उसने न केवल कवि या लेखक को, बल्कि मानव मात्र को अपने सृजन-धर्म के प्रति उद्बुद्ध किया है।

कवि का यह छोटा-सा प्रयास भी उसी चेतना का एक प्रतिबिम्ब है। प्रतीत होता है, यहाँ इसका रचयिता मेवाड़ की माटी में उस इतिहास को, उस नैसर्गिक सुन्दरता को, तीर्थों की उस पावनता को, उस आत्मगत स्वाभिमान, पुरुषार्थ और उत्सर्ग को देखकर मुग्ध हो गया है, जिनके कारण यह मेवाड़, जिन्दगी में एक विश्वास की भूमि बनकर जीवित रहा है।

सरल-सुबोध इन छोटी-छोटी सार्थक रचनाओं का हिन्दी-जगत् में अच्छा आदर हो, यह मेरी मंगलकामना है।

दिनांक :
20 जुलाई, 1989.

मेवाड़

। अरविन्द सिंह मेवाड़ ।

अपनी बात

जब विश्व में सभ्यता की शुरुआत हो रही थी, उन दिनों मेवाड़ ने मानवता को चलना और बोलना सिखाया। गर्व है इस धरती पर जहां शौर्य और साहस का डंका बजता रहा। यहां की सुरम्य भौगोलिक संरचना में जन-जीवन के असंख्य उत्कर्ष विकसित हुए। मेवाड़ के इस बहुमुखी स्वरूप को लयात्मक प्रस्तुति देने के लिए 'मेवाड़-मंजरी' की रचना की गई है।

'राजस्थान पत्रिका' के साहित्य संपादक भाई दुर्गाशंकर जी त्रिवेदी ने इस कृति का प्रणयन करने के लिए प्रोत्साहन दिया। कृतज्ञ हूं। तदन्तर "राजस्थान विकास" के सम्पादक भाई महेन्द्र जी जैन ने इसे प्रकाश में लाने का अवसर प्रदान किया। उपकृत हूं।

विश्वास है कि पाठक इसे पसन्द करेंगे।

गिलूंड-313207
(जिला उदयपुर, राजस्थान)

— जगदीश चन्द्र शर्मा

गीत-क्रम :

—

घास की रोटी

हल्दीघाटी ! बतलादो तो
वह अमर कहानी जी-भरकर
जब नभ अरावली फूट-फूट
रो पड़ा घास की रोटी पर ।

वह रोटी क्या छिन गई वहां
छिन गया हृदय वनवासी का
आजादी पर मिटने वाले
आजादी के विश्वासी का ।

विद्रोह भभकता हुआ उठा
कर्तव्यों की बलिवेदी पर–
जब राजतंत्र की परम्परा
हिल गई घास की रोटी पर ।

आजादी प्यारी हुई अधिक,
राणा को अपने प्राणों से
वे जुटे रहे, वे डटे रहे
दुःखों की भीषणताओं में ।

दिन-रात इसी में कटते थे
मगरों की दुर्गम छाती पर–
कर्तव्य चरम सीमा पर था
उस छिनी घास की रोटी पर ।

वह रोटी क्या थी, उसमें थे
आजादी के अरमान भरे,
प्रणवीरों के अभिमान भरे,
कर्तव्यों के सम्मान भरे ।

युग अंगड़ाई ले उठा प्रबल
परिवर्तन की चिनगारी पर–
आजादी का अभिषेक हुआ
अनमोल घास की रोटी पर ।

आदिसभ्य मेवाड़

जब दुनिया को मिली ज्ञान की
प्रथम किरण तुतलाई-सी,
आदि सभ्यता का संवाहक
मतवाला मेवाड़ है ।

विकसित था यह मोहनजोदड़ो
और हड़प्पा से भी पूर्व,
है प्रमाण उपलब्ध यहां पर
विश्वसनीय, असंख्य, अपूर्व ।

इसने कभी विश्व के सम्मुख
रखी न कोई आड़ है–
आदि सभ्यता का संवाहक
मतवाला मेवाड़ है ।

मिले यहां अवशेष पुरातन,
आदि सभ्यता के सिरमौर;
जग के गौरवपूर्ण स्थान वे
हैं गिलूंड, आयड़, बागोर ।

लगता, साक्षी के हित आतुर
हर मैदान पहाड़ है–
आदि सभ्यता का संवाहक
मतवाला मेवाड़ है ।

यहां ताम्रयुग, पशुपालन युग
के विभिन्न बर्तन-औजार;
भूमि-गर्भ से बाहर आकर
करते हैं जैसे मनुहार—

इन सब का उत्खनन समय को
मानो रहा पछाड़ है—
आदि सभ्यता का संवाहक
मतवाला मेवाड़ है।

मीरा के प्रति

देवि ! सफल साधना तुम्हारी
शाश्वत अनुकरणीय बन गई,
तुम्हें हमारे कोटि नमन !

स्नेह-राशि उमगाई तुमने,
मुग्ध हुआ प्रियतम का मानस,
मुग्ध हुआ सदियों का दर्शन
मुग्ध हुआ चिंतन का पारस ।

अद्भुत ही थी ओह, तुम्हारी
गिरिधर में मधुमयी लगन,
तुम्हें हमारे कोटि नमन !

जो था चिर विकराल असंभव
तुमने उसे बनाया संभव,
तीव्र हलाहल सुधा हो गया
पाकर स्पर्श तुम्हारा अभिनव ।

हम भी कष्टों का विष पीकर
अमृतमय करदें जीवन,
तुम्हें हमारे कोटि नमन !

हिन्दी के उपवन में तुमने
भरीं नई सज्जाएं अनुपम,

कितने ही हृदयों ने पाया
वाणी का आकर्षक संगम ।

तुष्ट हुई है हिन्दी तुमसे
पाकर अविचल अवलंबन,
तुम्हें हमारे कोटि नमन !

मेवाड़ की मन्दाकिनी

नाम दिया मेवाड़ भूमि ने
मन्दाकिनी बनास नदी का,
सदियों से सम्मान बढ़ा है
महिमामयी तरंग-पदी का ।

इसके तट पर नाथद्वारा
मानो सचमुच हरिद्वार है,
मातृकुंडिया में प्रयाग-सी
छटा त्रिवेणी की अपार है ।

परशुराम ने मातृकुंड में
कभी स्नान कर पाप धो दिया,
घाट बना कर यहां उन्होंने
सदा सुहाना पुण्य बो दिया ।

तीर्थों का अम्बार लगा है
जगह-जगह इसके अंचल में,
पुण्य-लाभ पाता है जन-जन,
अवगाहन कर इसके जल में ।

तीर्थ-स्थलों पर कितने ही
संस्कृति के मेले लगते है,
जन-मन में स्नेह-एकता के
जहां अदम्य भाव उमगते हैं ।

जगह-जगह इसके दुलार से
फसलों का अम्बार लुभाता,
कंठ-कंठ में खुशहाली के
गीतों का सरगम जुड़ जाता ।

राणा सांगा

राणा सांगा थे पराक्रमी
रण-कौशल के स्वामी,
रहे अभय की सदा कसौटी
जीवट के यश-गामी ।

साथी राजाओं में उनका
था सम्मान अनोखा,
कोई उन्हें न दे पाता था
सपने में भी धोखा ।

उनके लिए युद्ध भी जैसे,
था जीवन का अंग
हर जवान पर चढ़ा हुआ है
अब भी उनका रंग ।

तन पर अस्सी घाव लगे, पर
मन पक्का था धुन का,
एक हाथ कट गया युद्ध में
कटा पैर भी उनका ।

एक आंख भी चली गई थी
किन्तु न वे घबराए,
सदा उन्होंने संकट में भी
आगे कदम बढ़ाए ।

उनकी यादगार में मस्तक
श्रद्धा से झुकता है,
जो समाज पर है उनका ऋण
वह न कभी चुकता है ।

राजसमन्द

राणा राजसिंह सचमुच थे
सूरवीर सेनानी,
जब तक जीवित रहे किसी से
नहीं पराजय मानी ।

कार्य पराक्रम के जीवन में
जितने किए उन्होंने -
वे सारे ही अति महान् थे,
लगते हैं अनहोने ।

एक बार दुर्भिक्ष पड़ा तो
उसे उन्होंने जीता,
ऐसे समय प्रजा को उन से
ममता मिली पुनीता ।

तब विशाल तालाव उन्होंने
राजसमन्द बनाया,
यह जल का भंडार अनूठा
सबके लिए जुटाया ।

उसके तट पर 'नौचौकी' है
गढ़ स्थापत्य-कला का;
पत्थर में स्थायित्व पा गया
ज्यों स्वरूप चपला का ।

नौचोकी से लगी हुई है
वस्ती राजनगर की,
कुछ ही दूर कांकरोली है
निधि शोभा निर्झर की ।

वहीं सरोवर तीर द्वारिका-
धीश वसे मंदिर में,
छाया है उल्लास भक्ति का
नगरी के घर-घर में ।

राजसमन्द भरा पानी से
होने लगी सिचाई,
खेतों में हरियाली आयी
अन्न-सम्पदा लायी ।

उदयपुर की उषा

गिरिमाला की रम्य गोद में
नन्हा-मुन्ना खेले ज्यों-
अरावली के बीच उदयपुर
लुभा रहा है जग को यों।

कभी यहां सूनापन ही था,
जैसे निविड़ अंधेरा हो,
कलरव मिलते ही बस्ती का,
मानो हुआ सवेरा हो।

आज बसावट का उजियाला
अपनी चमक बिखेर रहा,
जिसकी रग-रग में सदियों तक
विपुल उतार-चढ़ाव बहा।

यहां प्रथम कुटिया की नींवें
जब वीरों ने डाली थी–
वही यहां की प्रथम उषा थी
वही प्रथम उजियाली थी।

कीर्तिपुरुष कुम्भा

राणा कुम्भा ने जीवन को
अच्छी तरह जिया था,
मिला उन्हें यश-वित्त, उन्होंने
जो भी काम किया था।

कुम्भा ने चित्तौड़-दुर्ग पर
विजय - स्तंभ बनाया,
जो स्थापत्य-कला में दुनिया
का आश्चर्य कहाया।

करता है साकार याद की
वह उन आशाओं को-
जीते थे गुजरात-मालवा
के तब राजाओं को।

कुम्भा ने बहु मुखी कला को
नव आयाम दिए थे,
नए सृजन के अभिनंदन में
कार्य ललाम किए थे।

कुम्भलगढ का किला उन्हीं की
प्यारी देन कहाता,
युग-युग तक वह यादगार की
स्रोतस्विनी बहाता।

एकलिंगनाथ

सर्व विदित है मेदपाट का
राजपाट था अधिक महान्,
सब महाराणा शासन करते
बन करके केवल दीवान ।

एकलिंगजी ही थे जिसके
असली शासक एवं इष्ट-
राजकाज की गतिविधियां थीं
उनके द्वारा ही निर्दिष्ट ।

जन-मन में यों बसा हुआ था
राणाओं का अनुपम त्याग,
सत्ता के पेचीदा पथ में
था यह विस्मयजनक विराग ।

एकलिंग हैं नाथ सभी के
कहलाते हैं भोलेनाथ,
जिनकी अनुकम्पा से कोई
रह सकता नहीं कभी अनाथ ।

शोभित है कैलाशपुरी में
जिनका मोहक पावन धाम,
दर्शन तो क्या, स्मरण मात्र से
पाता मन संतोष ललाम ।

एकलिंग के दर्शन करने
श्रद्धा से जाते हैं लोग,
अनुभव करते धन्य स्वयं को
मिलता जब भी उन्हें सुयोग ।

अनूठे उत्सव

मोहक है मेवाड़ धरा के
सब उत्सव – त्योहार,
जीवन में उल्लास बढ़ाने
आते बारम्बार ।

जन-जीवन में स्नेह जगाती
आती है गणगौर,
मस्ती भरे मनोरंजन की
लेकर नई हिलोर ।

रंग-अबीर-गुलाल उड़ा कर
खेला जाता फाग,
थिरक-थिरक उठता पग-पग पर
जीवन का अनुराग ।

झूलों के अम्बार लगाती
पुलकाती है तीज,
प्रेमी हृदयों ने पाई हो
जैसे दुर्लभ चीज ।

जहाँ अमावस्या हरियाली
भरती नई उमंग,
छवियों के वैभव को पाकर
रहते है सब दंग ।

घर-घर खिली हुई बगिया-सा
तब पाता उत्साह–
जब उसमें नूतन उमंग से
होता शुरू विवाह ।

चाहे हो लोकोत्सव अथवा
देवार्चन – अभिषेक,
सराबोर रहता विस्मय से
आयोजन प्रत्येक ।

किले मेवाड़ के

चित्तौड़ का किला है
मेवाड़ में पुराना,
मानों महत्व के धन-
का है बड़ा खजाना ।

उल्लेखनीय मांडल-
गढ़ का किला रहा है,
जिसने दबाव हरदम
इतिहास में सहा है ।

गरिमा – निकेत कुम्भल-
गढ़ दुर्ग झिलमिलाता;
जिसका अतीत मन को
अब भी बहुत सुहाता ।

छोटे-बड़े किले तो
भरमार ही सुहाते,
उपयोग दे चुके वे
मेवाड़ के अहाते ।

जयसमन्द

जयसमन्द की झील से
धन्य-धन्य हो उठी मही,
दुनिया में सबसे बड़ी
यह बनावटी झील रही ।

जो, राणा जयसिंह की
कहती है यशमयी कथा,
इससे ही साबरमती
जन-जन की हरती व्यथा ।

दो मगरों के बीच की
थोड़ी-सी दूरी सिमटी;
सुदृढ़ पाल बनी वहां,
मानों चिर-यातना मिटी ।

लम्बे-चौड़े क्षेत्र में
पानी का भण्डार भरा,
हुआ शीघ्र चारों तरफ
व्यापक अंचल हरा भरा ।

टापू - जैसी बस्तियां
नहीं रहीं, वे नहीं हटीं,
आने - जाने के लिए
नौकाओं से खूब पटी ।

दिखते हैं प्रासाद दो
नग-शिखरों पर सुहावने,
जय-समन्द से हैं जुड़े
दूर-दूर तक विपिन घने ।

शिल्प-कला मुस्का उठी
तट की हुई निहाल छटा,
नक्काशी की गोद में
लगता है, पत्थर लिपटा ।

दर्शक आते हैं बहुत,
पाते हैं आनन्द घना,
देखा करते हैं, सतत
प्रकृति की सुन्दर रचना ।

खानें और खदानें

आओ, इस मेवाड़-धरा को
हम जानें - पहचानें,
यहां सुलभ है भांति-भांति की
खानें और खदानें ।

जावर, झामरकोट, दरीबा,
बैठुम्बी, आगूंचा—
शीशे - जस्ते के माने में
है इनका यश ऊंचा ।

श्वेत संगमरमर प्रसिद्ध है
केवल राजनगर का,
काला है चित्तौड़-क्षेत्र के
चुने हुए प्रान्तर का ।

भोडल मिले सहाड़ा एवं
निकट भीलवाड़ा के,
तांबा भी आंजणा, केवड़ा
एवं रेवाड़ा के ।

घट्टी और खरल के पत्थर
उपरेड़ा देता है,
खड़िया से मंगरोप लग रहा
लोक - प्रिय नेता है ।

खानें यहां घिया पत्थर की
भी अनेक चमकी हैं,
ये जहाजपुर और उदयपुर
के दक्षिण दमकी है।

भांस्या-वाण्या का तलाब की
सब पट्टियाँ सुहाती-
वे इमारती पत्थर की
व्यापक आपूर्ति जुटातीं।

है बीगोद स्थान लोहे का
और भीम पन्ना का,
इसी तरह विख्यात रहा है
ग्रेफाइट गिरवा का।

नाथद्वारा के प्रति

यह धरा है चिन्मयी
श्री कृष्ण का यश-धाम
कर रहे अनगिन हृदय
जिसको विनीत प्रणाम ।

पर्वतों की गोद में
स्रोतस्विनी के तीर-
पुण्य नगरी में सुशोभित
हो रहे यदुवीर ।

योगि के झुंड लगते
हैं यहां अभिराम ।
यह धरा है···

मेरु गोवर्धन लिया-
कर में जिन्होंने धार,
दे रहे दर्शन वही
उस रूप में साकार ।

बन गया पर्यावरण
जिससे अतीव ललाम
यह धरा है...

नाम है श्रीनाथ जिनका
नाथद्वारा वास—

कर रहे स्तीर्ण वे
उल्लास ही उल्लास ।

प्रेरणा देता सभी को
रम्य उनका नाम ।
यह धरा है....

पा रहा मंदिर अपरिमित
राशियों का अर्घ्य–
ले रहे श्रद्धा सभी की
योगिराज समर्थ ।

तुष्ट होते हैं यहां जन
प्रेम से अविराम ।
यह धरा है....

भाव अभ्युत्थान के
होते यहां परिपूर्ण;
श्रेय - पथ के संकटों का
नित्य होता चूर्ण ।

यह प्रथा सदियों-युगों से
चल रही निष्काम ।
यह धरा है....

सज्जन-कीर्ति-सुधाकर

महाराणा सज्जनसिंह जी ने
किए अनूठे कार्य अनेक,
सही दिशा में सदा उन्होंने
रचनात्मक था रखा विवेक ।

जनता में नव जागृति आए
जन-जन हो चैतन्य - प्रबुद्ध,
किया प्रकाशन शुरू उन्होंने
जो था नया प्रयोग विशुद्ध ।

तब अखबारों का शैशव था
भारत भर में चारों ओर,
ऐसे समय उन्होंने सब तक
पहुंचाई थी नई हिलोर ।

'सज्जन-कीर्ति-सुधाकर' उनका
था लोकप्रिय अपना पत्र,
विषय बन गया वह चर्चा का
वर्षों तक पहुंचा सर्वत्र ।

समाचार पत्रों की दुनिया
निश्चित उससे हुई निहाल,
थी जिससे मेवाड़-राज्य की
सबके सम्मुख कीर्ति विशाल ।

चित्तौड़ का किला

कुछ बच्चे चित्तौड़ गए तो
उसी समय प्राचीन किला,
स्वागत करता हुआ उन्हें
एक मित्र की तरह मिला।

वह बोला—"प्यारे मित्रों,
जी-भर तुम्हें घुमाऊं मैं,
आओ, साथ चलो मेरे
अपना हाल बताऊं मैं।

पथ घुमाव से भरा हुआ
चढ़ो, सात है द्वार जहां,
पाडलपोल प्रथम है तो
रामपोल आखिरी वहां।

यह वीरों की धरती है
यादगार बलिदानों की,
भक्तों की गौरव गाथा
फुलवारी मुस्कानों की।

चारों ओर पहाड़ी पर
बना हुआ है परकोटा,
यही सुरक्षा का साधन-
था रण में सबसे मोटा।

ये कुंभा के भव्य महल
अपनी शान दिखाते हैं,
वे प्रासाद पद्मिनी के
फूले नहीं समाते हैं ।

लगता, विजयस्तंभ यहां
पत्थर से ही बना हुआ,
खड़ा आज भी उसी तरह
स्वाभिमान से तना हुआ ।

कीर्ति - स्तंभ कहाता है
कला - पुंज पाषाणों का,
निखर उठा है जगह-जगह
ठाट - बाट निर्माणों का ।

शिव-प्रतिमा पर गौमुख से
झरता है झर-झर पानी,
सजल पहाड़ी की रौनक
दिखती जानी - पहचानी ।

कुंड और तालावों की
यहां सुहानी है बस्ती,
ऊपर खेती भी होती
और गांव की है मस्ती ।

आज कालिका-मंदिर है
कभी सूर्य-मंदिर जो था ।

शोभित है मीरा-मंदिर,
खंडहर है न कोई थोथा ।

गोरा-बादल के गुम्बद,
स्मारक जयमल-पत्ता के,
सदियों से लेकर अब तक
मानक हैं गुणवत्ता के ।

शस्त्रागार नौलखा के
जीवन में क्या कहने हैं !
ये सतबीस देवरे भी
सब अतीत के गहने हैं ।

मौर्य, गुप्त, यूनान शुरू
में राजा बन कर छाए,
सूर्यवंश के छठी सदी
से अब तक चलते आए ।

कई आक्रमण हुए यहां
बही खून की धाराएं,
तूफानों की तरह सदा
घिर - घिर आईं बाधाएं ।

साहस और वीरता की
यह चित्तौड़ निशानी है,
हे, प्यारे मित्रों, बच्चों,
मेरी यही कहानी है ।

बापा रावल

थे मेवाड़ी राजवंश के
संस्थापक बापा रावल,
बचपन में वे गौ-सेवाहित
ले जाते उनको जंगल ।

एक बार कुछ हुआ अजूबा
करने लगे सभी विस्मय,
अकस्मात् ही एक गाय तब
चर्चा का बन गई विषय ।

बिना दुहे वह चरती-चरती
हो जाती थी दूध-रहित,
नहीं दिखाई देता उसका
कोई कारण संभावित ।

शुरू किया अगले ही दिन से
बापा ने लेना खोज-खबर,
चली अचानक वहां से
होते ही त ।

बापा भी चल पड़े उसी के
पीछे - पीछे लुक - कर,
चलते - चलते
गई घने व

जाकर कुछ ऊंचाई पर वह
खड़ी हो गई एक जगह,
नीचे था शिवलिंग, उसी पर
झरने लगा दूध रह-रह ।

ऋषि हारीत वहां बैठे थे
ध्यान-मग्न करते थे तप,
उनके लिए समान हो गए
थे वर्षा - सर्दी - आतप ।

झरा दूध सब, गाय वहां से
लौट गयी जब अपने वन,
उसके बाद तुरत बापा ने
जाकर ऋषि को किया नमन ।

ऋषि ने भेद बताया सारा,
बापा के मन जगी पुलक,
ऋषि के द्वारा मिली उसे थी
राज्य-प्राप्ति की एक झलक ।

बीते वर्ष बहुत जल्दी ही
तेज दौड़ने लगा समय,
स्वर्ग सिधारे ऋषि, बापा को
राज्य मिला, मिलगई विजय ।

वह शिवलिंग इष्ट बापा का
'एकलिंग' हो गया प्रमुख,

बापा रावल

थे मेवाड़ी राजवंश के
संस्थापक बापा रावल,
बचपन में वे गौ-सेवाहित
ले जाते उनको जंगल ।

एक बार कुछ हुआ अजूबा
करने लगे सभी विस्मय,
अकस्मात् ही एक गाय तब
चर्चा का बन गई विषय ।

बिना दुहे वह चरती-चरती
हो जाती थी दूध-रहित,
नहीं दिखाई देता उसका
कोई कारण संभावित ।

शुरू किया अगले ही दिन से
बापा ने लेना खोज-खबर,
चली अचानक गाय वहां से
होते ही तीसरा पहर ।

बापा भी चल पड़े उसी के
पीछे - पीछे लुक - छिप कर,
चलते - चलते गाय शीघ्र ही
गई घने वन के भीतर ।

जाकर कुछ ऊंचाई पर वह
खड़ी हो गई एक जगह,
नीचे था शिवलिंग, उसी पर
झरने लगा दूध रह-रह ।

ऋषि हारीत वहां बैठे थे
ध्यान-मग्न करते थे तप,
उनके लिए समान हो गए
थे वर्षा - सर्दी - आतप ।

झरा दूध सब, गाय वहां से
लौट गयी जब अपने वन,
उसके बाद तुरत बापा ने
जाकर ऋषि को किया नमन ।

ऋषि ने भेद बताया सारा,
बापा के मन जगी पुलक,
ऋषि के द्वारा मिली उसे थी
राज्य-प्राप्ति की एक झलक ।

बीते वर्ष बहुत जल्दी ही
तेज दौड़ने लगा समय,
स्वर्ग सिधारे ऋषि, बापा को
राज्य मिला, मिलगई विजय ।

वह शिवलिंग इष्ट बापा का
'एकलिंग' हो गया प्रमुख,

'राजा' उसे कहा बापा ने
पाया खुद मंत्री का सुख ।

बापा 'रावल' हुए, स्वयं को
'शिव का मंत्री' कर घोषित,
'राणा' और 'महाराणा' से
रहा वंश उनका चर्चित ।

तीर्थपुंज मेवाड़

चारों धाम सिमट आए हैं
पाकर अनुपम आंगन,
वह प्यारा मेवाड़ सभी का
रहा सुरम्य सनातन ।

चारभुजा, कैलाशपुरी का
लुभा रहा है अंचल,
नाथद्वारा, परशुराम का
स्मरणमात्र है उज्ज्वल ।

मातृकुंडिया, सिंगोली का
योगदान है उत्तम,
वहीं गौतमेश्वर की छवि का
दर्शनीय है संगम ।

किन्तु कांकरोली ने अपना
स्थान बनाया परिचित,
इधर, सांवराजी संबोधन
खूब हो उठा वर्धित ।

ऋषभदेव से मिला हुआ है
त्याग - दया का स्पंदन,
दीवानाशाह की अनोखी
है दरगाह कपासन ।

घावंटा, आवरी, जांतला
और जोगण्या रुचिकर,
मातृ - भावना के सम्मानित
शक्तिपीठ हैं सुन्दर ।

महाराणा भूपाल

जनहित में चिंतन था जिनका
उन्नत, व्यापक और विशाल-
धन्य महाराणा भूपाल !

रूढ़िवाद से दूर रहे वे
नई चेतना के नायक थे;
लीक छोड़ कर चलने वाले
जन - जीवन के उन्नायक थे।

अहं उन्हें छू भी न सका था
सेवा से वे हुए निहाल-
धन्य महाराणा भूपाल !

किए सदा चौंकाने वाले
अनगिन काम उन्होंने ऐसे,
राजतंत्र हो गया प्रवर्तित-
प्रजातंत्र के पथ में जैसे।

जनता की श्रद्धा पाकर वे
आजीवन थे मालामाल,
धन्य महाराणा भूपाल !

नवयुग के अनुसार उन्होंने
जग - मन में विश्वास जगाया,

घावंटा, आवरी, जांतला
और जोगण्या रुचिकर,
मातृ - भावना के सम्मानित
शक्तिपीठ हैं सुन्दर ।

महाराणा भूपाल

जनहित में चिंतन था जिनका
उन्नत, व्यापक और विशाल-
धन्य महाराणा भूपाल !

रूढ़िवाद से दूर रहे वे
नई चेतना के नायक थे;
लीक छोड़ कर चलने वाले
जन - जीवन के उन्नायक थे ।

अहं उन्हें छू भी न सका था
सेवा से वे हुए निहाल-
धन्य महाराणा भूपाल !

किए सदा चौंकाने वाले
अनगिन काम उन्होंने ऐसे,
राजतंत्र हो गया प्रवर्तित-
प्रजातंत्र के पथ में जैसे ।

जनता की श्रद्धा पाकर वे
आजीवन थे मालामाल,
धन्य महाराणा भूपाल !

नवयुग के अनुसार उन्होंने
जग - मन में विश्वास जगाया,

अपने पिछड़े हुए राज्य में
शिक्षा का विस्तार बढ़ाया ।

वे सपूत थे, जन्म - भूमि का
हुआ गर्व से ऊंचा भाल,
धन्य महाराणा भूपाल !

राजस्थान बना तब ज्यों ही
पूर्ण हो गया उनका सपना,
पाया पद सर्वोच्च* उन्होंने
स्नेह दिया जन-गण को अपना ।

सत्ता से निर्लिप्त रहे वे
हुए दीन - दुखियों की ढाल,
धन्य महाराणा भूपाल !

* महाराज प्रमुख

स्वामिभक्त पन्नाधाय

वह उदयसिंह बालक छोटा
नन्हा राजा कहलाता था,
उसकी एवज में राजकार्य
सैनिक बनवीर चलाता था ।

उस समय धाय पन्ना ने ही
शिशु उदयसिंह को बड़ा किया,
अपने बच्चे से भी ज्यादा
उसकी सुविधा पर ध्यान दिया ।

जब एक बार शिशु उदयसिंह
गहरी निद्रा में सोया था,
त्यों ही पन्ना के पास एक
सेवक आते ही रोया था—

बोला—"पन्ना अब तो अनर्थ
होने ही वाला है भारी,
कपटी बनवीर आ रहा यहाँ
अपना ली उसने मक्कारी ।

वह उदयसिंह की हत्या कर
खुद राजा बनना चाह रहा,
लालच में अंधा होकर वह
रिपु का दायित्व निबाह रहा ।

तत्काल धाय ने उदयसिंह
के कपड़े - हार उतार दिए,
अपने बेटे के वस्त्र उसे
पहना कर, नए विचार दिए ।

तब उसे छिपा कर डलिया में
सेवक द्वारा भेजा वन में,
फिर अपने सुत को राजवस्त्र
पहना कर कुछ सोचा मन में ।

त्यों ही कुमार के बिस्तर पर
अपने बेटे को सुला दिया,
स्वामी की रक्षा में उसने
मां की ममता को भुला दिया ।

तब तक क्रोधित बनवीर वहां
नंगी तलवार लिए आया,
"झट बता, कहां है उदयसिंह ?"
कह कर, जोरों से चिल्लाया ।

पन्ना ने उसे इशारे से
अपने बच्चे को बता दिया,
सोया हो जैसे उदयसिंह
इस तरह धैर्य से जता दिया ।

बनवीर बढ़ा दो कदम उधर
बच्चे के टुकड़े कर डाले,

अपना बेटा मरने पर भी
माता ने आंसू नहीं ढाले ।

स्वामी के हित में पन्ना ने
अपने बेटे का त्याग किया,
मानो उस मां ने स्वामिभक्ति
से ही अटूट अनुराग किया ।

तब उसे छिपा
सेवक द्वारा
फिर अपने सुत
पहना कर कुछ

तब तक क्रोधित
नंगी तलवार
"झट बता, कहां है
कह कर, जोरों से

वनवीर बढ़ा दो
बच्चे के टुकड़े

[illegible] के पह

[illegible], [illegible] का
[illegible] मेवाड़;
[illegible] सभी के,
[illegible] सभी पहाड़।

[illegible] की नाल
[illegible] है
[illegible] की नाल
[illegible] पा रही

[illegible]

मेवाड़ की नदियां

है मेवाड़ सदा मशहूर,
नदियां हैं जिसमें भरपूर ।

सबसे लम्बी नदी बनास
देती सदा नवीन विकास ।

कोठारी - खारी का साथ,
सबसे मिला रहा है हाथ ।

बेड़च - गम्भीरी का वेग,
चुका रहा है युग का नेग ।

चम्बल - साबरमती अथाह,
यहां दिखाती रम्य प्रवाह ।

सई, गोमती, वाकल, सोम,
हरती पीड़ा का तमतोम ।

अपर गोमती, जाखम नित्य-
दिखा रही कृषि का लालित्य ।

यहां चन्द्रभागा का ठाठ,
पढ़ा रहा जीवन का पाठ ।

किन्तु मानसी का है मान,
और जामरी है उत्थान ।

देती नदियां हमें दुलार,
बांट रहीं सदियों से प्यार ।

मेवाड़ के पहाड़

गिरि-शिखरों, गिरिमालाओं का
है समूह मंजुल मेवाड़;
भिन्न - भिन्न हैं नाम सभी के,
हैं अरावली सभी पहाड़ ।

'देसूरी की नाल' प्रमुख है
उसी भांति है 'घाणेराव,'
'भाणपुरा की नाल' इन्हीं की
तुलना का पा रही प्रभाव ।

सब से ऊंचा पर्वत 'जरगा'
तदनंतर है 'कुंभल मेरु,'
'गोरम' और 'साटमाता' भी
अपनी - अपनी जगह सुमेरु ।

'परशुराम' का सुन्दर भी तो
लगता है अत्यन्त महत्त्व,
इसी तरह शोभित होता है
'[illegible] पर्वत' का [illegible] ।

उत्तर से पश्चिम तक फैले
दक्षिण - पूर्व पहाड़ी भाग-
जंगल भरे हैं नदियों से भिन्न
हरे वनों का [illegible] सुहाग ।

मेवाड़ की नदियां

है मेवाड़ सदा मशहूर,
नदियां है जिसमें भरपूर ।

सबसे लम्बी नदी बनास
देती सदा नवीन विकास ।

कोठारी - खारी का साथ,
सबसे मिला रहा है हाथ ।

बेड़च - गम्भीरी का वेग,
चुका रहा है युग का नेग ।

चम्बल - साबरमती अथाह,
यहां दिखाती रम्य प्रवाह ।

सई, गोमती, वाकल, सोम,
हरती पीड़ा का तमतोम ।

अपर गोमती, जाखम नित्य-
दिखा रही कृषि का लालित्य ।

यहां चन्द्रभागा का ठाठ,
पढ़ा रहा जीवन का पाठ ।

किन्तु मानसी का है मान,
और जामरी है उत्थान ।

देती नदियां हमें दुलार,
बांट रहीं सदियों से प्यार ।

मेवाड़ की सीमा

यह मेवाड़ कहां तक फैला
सचमुच इसे बताएं,
सीमा पर अपने पड़ोस का-
आओ, परिचय पाएं।

उत्तर में अजमेर लगा है
शाहपुरा भी आता,
जयपुर उत्तर - पूर्व भाग में
अपनी छटा दिखाता।

कोटा, बूंदी, टोंक, ग्वालियर
पूर्व दिशा में फैले,
और बांसवाड़ा - डूंगरपुर
दक्षिण में न अकेले।

विजयनगर - ईडर दक्षिण,
पश्चिम में हैं दोनों ओ-
पश्चिम है जोधपुर-मेरवाड़ा
में साथ सिरोही।

यों इन्दौर तथा झालावाड़
भी पूर्व के कहाते,
[illegible] यहां में कुछ इन - [illegible]
में [illegible] से आते।

वीरों का औदार्य

जिनके गीत समय गाता है
वे सब थे मतवाले वीर,
बसी हुई है जन-जन के मन
आकर्षक उनकी तस्वीर ।

शरणागत की रक्षा करना
था उनका पहला कर्तव्य,
असहायों पर वार न करना
था उनका पावन मंतव्य ।

महिलाओं को आदर देना
बना हुआ था उनका धर्म,
सच्चाई पर मर - मिट जाना
था उनका न्यायोचित कर्म ।

प्रण - पालन में कभी - कहीं भी
दुर्बल रहा न उनका पक्ष,
हुआ धराशायी, जब-जब भी
लालच बनकर गया समक्ष ।

समरांगण में भी बच्चों को
दिया सदैव उन्होंने प्यार,
वे आए मानव - जीवन में
देवों का लेकर अवतार ।

मेवाड़ की सीमा

यह मेवाड़ कहां तक फैला
सचमुच इसे बताएं,
सीमा पर अपने पड़ौस का-
आओ, परिचय पाएं ।

उत्तर में अजमेर लगा है
शाहपुरा भी आता,
जयपुर उत्तर - पूर्व भाग में
अपनी छटा दिखाता ।

कोटा, बूंदी, टोंक, ग्वालियर
पूर्व दिशा में फैले,
और बांसवाड़ा - डूंगरपुर
दक्षिण में न अकेले ।

विजयनगर - ईडर दक्षिण,
पश्चिम में हैं दोनों ही-
पश्चिम है जोधपुर-मेरवाड़ा
के साथ सिरोही ।

यों इन्दौर तथा प्रतापगढ़
भी पूर्व के कहाते,
गांव यहां के कुछ इन - जैसे
के हिस्सों में आते ।

वीरों का औदार्य

जिनके गीत समय गाता है
वे सब थे मतवाले वीर,
बसी हुई है जन-जन के मन
आकर्षक उनकी तस्वीर ।

शरणागत की रक्षा करना
था उनका पहला कर्तव्य,
असहायों पर वार न करना
था उनका पावन मंतव्य ।

महिलाओं को आदर देना
बना हुआ था उनका धर्म,
सच्चाई पर मर - मिट जाना
था उनका न्यायोचित कर्म ।

प्रण - पालन में कभी - कहीं भी
दुर्बल रहा न उनका पक्ष,
हुआ धराशायी, जब-जब भी
लालच बनकर गया समक्ष ।

समरांगण में भी बच्चों को
दिया सदैव उन्होंने प्यार,
वे आए मानव - जीवन में
देवों का लेकर अवतार ।

झीलों की नगरी

आओ मित्रों, तुम्हें बताएं
रम्य उदयपुर की झांकी,
शिखरों को विवित करती है
झीलों की शोभा बांकी ।

ये गर्वीले राजमहल है
दूर - दूर तक दमक रहे,
श्वेत संगमरमर की छवि-से
कलापूर्ण बन चमक रहे ।

आकर्षण का केन्द्र बनी है
वर्षो से मोतीमगरी,
रही राजधानी प्रताप की
उस बूते पर यह नगरी ।

यह ऊंचा विराट मंदिर है
लुभा रहे जगदीश यहां,
पीढ़ी - दर - पीढ़ी श्रद्धा का
जीवित रहा प्रवाह जहां ।

इस उद्यान गुलाबबाग में
छवियों का अम्बार लगा,
देख इसे कश्मीरी सज्जा
में भी ईर्ष्याभाव जगा ।

यहीं जन्तु - आलय से दर्शक
नई ताजगी पाते हैं,
वहीं निकट पक्षी-विहार से
नव उल्लास जगाते हैं ।

फव्वारों से सजा बगीचा
है सहेलियों की बाड़ी,
ओढ़ा करती छवि जब चाहे
वर्षा की नूतन साड़ी ।

सुखद संग्रहालय में स्थित है
राजघराने की गरिमा,
आयड़ और महासतियां भी
चिर अतीत की है महिमा ।

वनवासी जीवन

पर्वतमालाओं का प्रहरी
मेवाड़ीपन का बलधाम,
वनवासी लोगों का जीवन
है श्रम का यशपुंज ललाम ।

बढ़ते हैं ये जिधर, असंभव
हो जाता है अंतर्धान,
मानों उन्हें मिला है सदियों
से निर्भयता का वरदान ।

भरा हुआ है उनके तन-मन
में साहस का पारावार,
लगा रही है निष्ठा उनमें
महाशक्तियों के अम्बार ।

कर्तव्यों के पुण्य - पंथ में
रहते हैं ये नित गतिशील,
उनकी महिमामयी लगन में
कहीं न आ पाती है ढील ।

जाग्रत है उनका अंतर्मन,
जहां सुशोभित है विश्वास,
ललक रहा है उनका मोहक
राग - द्वेष रहित उल्लास ।

कदम-कदम पर पाते हैं वे
कितने ही भीषण संघर्ष,
जूझा करते हैं जब सम्मुख
बाधाएं आतीं दुर्धर्ष ।

विजय - लाभ हथिया लेते हैं
उनके तेजस्वी संकल्प,
करते हैं वे स्पर्श युगों का
हो जाता है काया - कल्प ।

मुखरित है उनमें संस्कृति का
निर्झर - गर्वीला रूप,
वे यथार्थ के आराधक हैं
सुखदा संस्कृति के अनुरूप ।

उनकी मंगल अभिलाषाएं
कभी नहीं हो पातीं मन्द,
पवन वेग-सी व्यापक उनकी
चिंतन - धारा है स्वच्छंद ।

मेलजोल हैं उनमें अनुपम,
रखते हैं वे दृढ सहयोग,
मूल्य समय का समझ, किया
करते हैं उपयोगी उद्योग ।

जागी उनमें नई चेतना
रूढ़ि - रीतियां होंगी दूर,

झंझाएं टकरा कर उनसे
हो जाएंगी चकनाचूर ।

नया विकास खड़ा है उनके
स्वागत में ले कुंकुम - थाल
व्यापक वनवासी - जीवन का
है रचनात्मक ध्येय विशाल ।

देश - प्रेम है अतिशय उनमें
वे स्वदेश हित हैं तैयार,
वे तत्पर हैं नवयुग में-
लाने को श्रम की नई बहार ।

मेवाड़ हमारा

सघन वनों का संगम है
मेवाड़ समूचा;
हरियाली का दमखम है
मेवाड़ समूचा।

खेती का विस्तारण है
मेवाड़ अनूठा।
उर्वरता का प्रांगण है
मेवाड़ अनूठा।

लघु-धंधों का पोषक है
मेवाड़ हमेशा;
निष्ठा का उद्घोषक है
मेवाड़ हमेशा।

फल - फूलों का है निर्भय
मेवाड़ सहारा;
जड़ी - बूटियों का अक्षय
मेवाड़ सहारा।

है प्रकृति का चिर शाद्वल
मेवाड़ हमारा;
जन - साधारण का सम्बल
मेवाड़ हमारा।

स्वाधीनता आन्दोलन

भारत में जब अंग्रेजों की
पराधीनता के दुःख जागे-
आजादी के आन्दोलन में
था मेवाड़ हमारा आगे ।

इसके वीर सपूतों ने तब
भोगे अत्याचार कई थे;
किन्तु प्रतिज्ञा से न डिगे थे
अपने व्रत पर अडिग रहे थे ।

पथिक, बारहठ, वर्मा तीनों
थे जननायक जनजागृति के;
स्वतंत्रता के पथदर्शन में
संचालक थे सुदृढ़ गति के ।

बिजोलिया आंदोलन तब
चारों ओर प्रसिद्धि पाई;
सत्य - अहिंसा के बूते पर
नवयुग की जय क्रांति आई ।

बीता समय, अन्ततोगत्वा
नव स्वतंत्रता पाई हमने;
नई सिद्धि का वरण कर लिया
जैसे इस मेवाड़ी तप ने ।

गाड़ीया लुहार

गाँव-गाँव, नगर-नगर
कर रहे विहार-
गाड़िया लुहार ।

होते हैं काम खूब
श्रम के ये दूत,
मिटाते समस्या को
वीरवर सपूत ।
बांट रहे जन-जन में
जीवन का प्यार-
गाड़िया लुहार ।

देते हैं लोहे को
नित नूतन रूप;
रहते हैं सर्दी में,
सहते है धूप ।
पाते हैं वर्षा की
मद भरी फुहार-
गाड़िया लुहार ।

गाड़ी है घर इनका
गाड़ी संसार;
गाड़ी में बसता हैं
इनका परिवार ।

कहते हैं गाड़ी को
प्रण का आधार-
गाड़िया लुहार ।

राणा के साथी ये
राणा के मित्र;
निभा रहे चलने की
प्रतिज्ञा विचित्र ।
मुक्ति - स्वप्न देख रहे
अब तो साकार-
गाड़िया लुहार ।

देश ने किया अतीव
इनका सत्कार;
आए चित्तौड़ सभी
पुनः एक बार ।
किन्तु नहीं छोड़ सके
भ्रमण का विचार-
गाड़िया लुहार ।

महाराणा भगवतसिंह के प्रति

वैदिक संस्कृति के उन्नायक,
संस्कारों के स्वामी;
रहे क्रांतदर्शी जग में तुम,
युग के अन्तर्यामी ।

महाप्रयाण किया है तुमने
अकस्मात् ही ऐसा-
उल्कापात हुआ जन-मन पर,
वज्रपात हो जैसा !

नाम तुम्हारा भक्ति-शक्ति का
तेजस्वी संगम है;
जन-जागृति में देन तुम्हारी
अजर - अमर - अनुपम है ।

तुम स्वतंत्रता के वाहक थे,
प्रजातन्त्र के प्रहरी;
निष्ठा रही सदैव तुम्हारी
नव विकास में गहरी ।

धर्म, कला, साहित्य आदि को
तुम से मिला सहारा;

प्रतिभाओं के साथ रहा है
आशीर्वाद तुम्हारा ।

वीर भागीरथी तुम खेलों की
जन - गंगा लाए हो;
ज्योति-पुंज बन कर समाज में
हरदम हर्षाए हो ।

दुनिया का नेतृत्व किया है
तुम ने आदर्शों में,
लगे रहे तुम जीवन भर
जन - जन के उत्कर्षों में ।

जिस पथ पर तुम बढ़े श्रेय के
प्यार दिया जनता ने,
पाया है तुम से महिमा का
सम्बल पावनता ने ।

सूझ बूझ के धनी - मनस्वी,
जादूगर वाणी के,
रहे मसीहा, शुभचिंतक तुम
मानों हर प्राणी के ।

जिन मूल्यों के लिए जिए तुम
धन्य सभी है उनसे,
ज्यों शीतल छाया पाते है
राही लू में झुलसे ।

जन-मंगल के स्वप्न तुम्हारे
जो भी रहे अधूरे-
हम अपनी पूरी श्रद्धा से
उन्हें करेंगे पूरे ।

तुम सचमुच ही देवदूत थे
मानवता के प्यारे,
हम विनम्र, अर्पित करते हैं
सादर नमन हमारे !

मेवाड़ की ऋतुएं

मेवाड़ में सदा ही
ऋतुएं रहीं सुहानी,
प्रत्येक बार गूंथी
सबने मधुर कहानी।

आई वसंत ऋतु जब
वन-बाग झिलमिलाए,
छिटके प्रसून मानों
भू-भाग खिलखिलाए।

गर्मी प्रचंड ऐसी
जो बन गई परीक्षा,
लूएं चलीं भयंकर
देकर नई प्रतीक्षा।

अम्बार बादलों के
ज्योंही घिरे गगन में,
वर्षा लगी थिरकने
छाई खुशी पवन में।

ज्योंही शरद् लुभाई
वैभव बढ़ा धरा का,
साकार हो गया ज्यों
उल्लास उर्वरा का।

हेमन्त काल आते
हो शीत गुनगुनाई,
वातावरण समूचा
पाने लगा बड़ाई।

पतझड़ हुआ शिशिर में
ठंडक अतीव फैली,
दर्पण बने जलाशय
नदियां रहीं न मैली।

ऋतुएं सभी यहां पर
निर्बाध खेलती हैं,
तूफान ठेलती हैं
आभार झेलती हैं।

पर्वतों का प्रभाव

गुण-गरिमा से लदे हुए हैं
ये पर्वत मेवाड़ के;
केन्द्र बने हैं जो वर्षों से
झाड़ और झंखाड़ के।

मिलता है वर्षा को न्योता
इनके द्वारा शान से;
जन्म लिया है नदियों ने
मानो इनके वरदान से।

लकड़ी और जड़ी-बूंटी के
ये पर्वत भंडार हैं;
खानों और खदानों को भी
इनसे मिला दुलार है।

लोग पहाड़ों के, निश्चय ही
होते कर्मठ-वीर हैं;
रेगिस्तान रोकने वाले
ये पर्वत प्राचीर हैं।

हो जाते हैं दृश्य मनोरम
इनके, वर्षा काल में;
रहता है मस्ती का आलम
हरदम इनके हाल में।

गर्वीला इतिहास

इस मेवाड़-धरा का सचमुच
गर्वीला इतिहास है;
सदावहार शौर्य का जिसमें
रहा सदा मधुमास है।

इसकी गौरव-गाथाओं का
दिव्यानन्द अपार है;
जहां इन्द्रधनुषी रंगों में
स्मृतियों का संभार है।

स्वर्ण अक्षरों में अंकित है
उनकी शौर्य – कहानियां;
बिखरी हैं चप्पे-चप्पे में
जिनकी अमिट निशानियां।

ज्योतिपुंज की तरह प्रखर है
वीरों की आराधना;
मातृभूमि के लिए समर्पित
थी उनकी हर कामना।

त्याग और बलिदान भावना
थी उनके अरमान में;
अनायास ही झुकता है
मस्तक उनके सम्मान में।

मेवाड़ की लो-संस्कृति

उन्नत है मेवाड़ समूचा,
लोक-सांस्कृतिक वैभव से।

कण-कण जिसका लोक-कथाओं
से रहता है ओतः-प्रोत,
चाहे रहे परिस्थिति जो भी
प्रवहमान है जिनका स्रोत।

है उनका अस्तित्व नहीं कम
यहां किसी भी उत्सव से।

भक्ति, शक्ति, उल्लास आदि के
सरस लोक-गीतों के बोल,
जन-जीवन में अनायास ही
देते हैं तन्मयता घोल।

अधिक रही मादकता इनकी,
उच्चकोटि के आसव से।

लोक-वाद्य अलगोझा, मांदल,
थाली, ढोलक, बांक्या, ढोल,
चौरासी, घूघरे आदि हैं
लोक-प्राण की निधि अनमोल।

इनकी जीत हुई हरदम, ये
दबे न किसी पराभव से।

धोती, पगड़ी और अंगरखा
ये पुरुषों के हैं परिधान,
सदियों से ओढ़नी, घाघरा,
चोली है नारी की शान।

कमरबंध, कंठादि टिके हैं
लोक-समझ के उद्भव से।

गवरी, गैर, भवाई, गरबा,
लोक-नृत्य हैं सदा सुरम्य,
लोकोत्सव भी परम्परा के
हैं जीवित आयाम अगम्य।

लोक-नृत्य अवसर आने पर
लगते हैं यश-पुंगव-से

प्रस्फुट होती बात-बात में
लोकोक्तियां जहां सामोद,
बहुत प्रभावी बन जाता वह,
जब भी छिड़ता कहीं विनोद।

लोकोक्तियां बनी हैं मानो
लोकोत्तर मोहक रव से।

किन्तु लोक-जीवन तो सचमुच
लगता सदाबहार नवीन,
जन-मन है सम्पन्न जहां पर;
दिखता कभी न कोई दीन।

जिसे न चिन्ता व्याप सकी है
अब तक किसी असम्भव से।

मेवाड़ को नमन है !

ईमान, त्याग, साहस
जिसका अथाह धन है–
उस पुण्य-भूमि पावन
मेवाड़ को नमन है !

जिसने सदैव झेले
संकट अनेक भारी;
हर बार मात दी है
तूफान को करारी।

कर्तव्यनिष्ठ जिसका
आंगन रहा चमन है–
उस पुण्य-भूमि पावन
मेवाड़ को नमन है !

जिसने असीम गौरव
पाया शताब्दियों से;
सिद्धांत निज अनूठे
पाले तथैव पोसे।

बलिदान की प्रथा में
जिसने भरी लगन है;
उस पुण्य-भूमि पावन
मेवाड़ को नमन है !

जिसने दिया जगत को
उत्थान वीरता का;
आत्माभिमान से की
ऊँची विजय-पताका।

सम्मानपूर्ण वैभव
जिसका मिला गहन है;
उस पुण्य - भूमि पावन
मेवाड़ को नमन है!





श्री जगदीशचन्द्र शर्मा

जन्म : श्री बालूराम जी उपाध्याय, गिलूण्ड के घर 29 अप्रैल, 1937 को।

लेखन : कविता, कहानी, नाटक, निबन्ध, संस्मरण आदि सभी विधाओं में। देश के लगभग सभी हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तक संकलनों में सैकड़ों रचनाएं प्रकाशित। राजस्थान और पंजाब सरकार के शिक्षण-पाठ्यक्रमों में कविताएं सम्मिलित। हिन्दी और राजस्थानी में पिछले 30 वर्षों से निरन्तर सृजन।

कृतियां : बालगीत, चौके-छक्के, किरणों की मुस्कान (तीनों पुरस्कृत) एवं मेवाड़ मंजरी प्रकाशित तथा नेहरूजी के प्रेरक प्रसंग, पर्यावरण के गीत (प्रेस में)।

प्रसारण : सन् 1961 से आकाशवाणी से रचनाओं का निरन्तर प्रसारण।

पुरस्कार-सम्मान :

महामहिम उपराष्ट्रपति द्वारा सम्मानित। राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा बाल साहित्य का पुरस्कार प्राप्त। चित्तौड़गढ़ जिलाधीश, कादम्बिनी मासिक, शिक्षा विभाग-राजस्थान, राजस्थान सरकार, तटस्थ रचनाकार संघ, इलाहाबाद की शकुन्तला सरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार समिति आदि के द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत।

—राजकीय सीनियर उच्च मा० विद्यालय